



प्रभात

छिपाएंगे नहीं, छापेंगे

facebook-Subharti Tv Twitter-Subharti Tv



www.subhartimedia.com

लखनऊ, मंगलवार, 19 मार्च 2019, मूल्य : 2.00, पृष्ठ : 12

उत्तर प्रदेश-उत्तराखंड से प्रकाशित

खिलाड़ियों की सुरक्षा हमारी प्राथमिकता : आईसीसी

पेज - 11

प्रभात

संतकबीरनगर-सिद्धार्थनगर-गोरखपुर-देवरिया-बस्ती

मंगलवार

लखनऊ, 19 मार्च 2019

9

तकनीकी शिक्षा का स्वरूप बदलने से बढ़ेंगे रोजगार के अवसर : प्रो.भरत राज

लखनऊ। प्रभात

किसी राष्ट्र के सामाजिक व आर्थिक विकास में तकनीकी शिक्षा एक महत्वपूर्ण एवं सशक्त भूमिका निर्वहन करती है। भारत में इंजीनियरिंग शिक्षा का विकास पिछले 2.3 दशकों में बहुत तेजी से बढ़ा है। यद्यपि देश के आईआईटी प्रौद्योगिकी संस्थान अपने क्षेत्र में सबसे अच्छे माने जाते हैं परंतु भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों गिनती विश्वस्तरीय प्रतिष्ठित संस्थानों से अभी भी काफी पीछे है। यह विचारणीय है कि राम व कृष्ण प्राचीन काल में लिखे वेद पुराणों में अस्त्र-शस्त्रों का जो जिक्र है जैसे अग्नि वाण शब्दवैधी वाण आदि के परिदृश्य में मिसाइल व लेजर संचालित मिसाइल से तुलना कर सकते हैं परंतु उनकी तकनीक व शूक्ष्म यंत्रों के विकास तक अभी भी हम नहीं पहुंच पाये हैं। इसी प्रकार से महर्षि भरद्वाज के वैमानिक शास्त्र की यदि विवेचना करते हैं तो 108 प्रकारके विमानों का जो जिक्र है वह एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश एक देश से दूसरे देश या आसमान में मौजूद ग्रहों तक पहुंचने के लिये तैयार किए जाने व उनके उपयोग का जिक्र है। चूंकि हमारा देश शिक्षा व ज्ञान के परिदृश्य में विश्वगुरु के रूप में जाना जाता था अतः भारत वर्ष में तकनीकी विकास वैदिक काल से

चिंतन

- ❑ छात्रों को स्कूली शिक्षा से तकनीकी शिक्षा की तरफ मोड़ने की जरूरत
- ❑ तभी मजबूत होगा देश का भविष्य



प्रो.भरत राज सिंह
महानिदेशक
एसएमएस, लखनऊ

ही अपनी चरम सीमा पर फल-फूल रहा था, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है। भारत में ब्रिटिश शासकों के दौरान तकनीकी शिक्षा की शुरुआत भवन निर्माण नहर सड़क बन्दरगाह आदि के निर्माण व मरम्मत के लिए तकनीकी अभियन्ताओं की आवश्यकता थी। अमेरिका व यूरोप में तकनीकी महाविद्यालयों का विकास हो रहा था जो गणित में विशेष प्रशिक्षण दे रहे थे। भारत में भी यह मांग उठने लगी कि औपनिवेशिक भारत में भी इस प्रकार के तकनीकी विद्यालय खोले जाएं। सन् 1825 से पहले कलकत्ता व मुम्बई में इस प्रकार के स्कूल थे। लेकिन

प्रमाण यह भी है कि गुण्डू मद्रास में औद्योगिक प्रशिक्षण विद्यालय खोला गया जो आयुध (गन व कारतूस) फैक्ट्री के समीप था। इसी प्रकार सन् 1854 में पूना में अभियन्ताओं के प्रशिक्षण के लिए एक विद्यालय खोला गया। नवम्बर 1856 में कलकत्ता में बंगाल इंजीनियरिंग महाविद्यालय खोला गया। जिसे सन् 1880 में सिबपुर बिशॉप महाविद्यालय में स्थानान्तरित कर दिया। सन् 1887 में बोम्बे विक्टोरिया जुबली तकनीकी संस्थान बॉम्बे में इलेक्ट्रॉनिक्स मैकेनिकल व टेक्सटाइल में डिग्री देते थे। सन् 1907 में स्वदेशी आन्दोलन के द्वारा भारत में एक राष्ट्रीय तकनीकी विश्वविद्यालय खोले जाने की मांग उठी। इस प्रकार जादवपुर में तकनीकी विद्यालय बना जो सन् 1908 में केमिकल व इंजीनियरिंग में डिप्लोमा तथा 1921 में डिग्री देने लगा। भारतीय औद्योगिक आयोग (1915) के अध्यक्ष सर थॉमस होलैण्ड ने भी औद्योगिक शिक्षा के शुरुवात करने के लिए कई सुझाव दिये। कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (1917) में केमिकल व इलेक्ट्रॉनिक डिग्री महाविद्यालय की स्थापना तथा पण्डित मदन मोहन मालवीय के प्रयास से बनारस विश्वविद्यालय में सन् 1917 में मैकेनिकल इलेक्ट्रिकल

तथा धातुकर्म में इंजीनियरिंग की उपाधि प्रारम्भ की गई। सिबपुर गुण्डू तथा पूना में 15 वर्ष पश्चात् मैकेनिकल इलेक्ट्रिकल एवं धातुकर्म इंजीनियरिंग में पाठ्यक्रमों को प्रारम्भ किया गया। स्वतन्त्रता के पश्चात भारत में तकनीकी शिक्षा विभिन्न स्तरों पर प्रदान की जाती है जैसे शिल्पकला डिप्लोमा डिग्री अधिस्नातक और शोध जैसे विशिष्ट क्षेत्रों में तकनीकी विकास एवं आर्थिक उन्नति के विभिन्न पहलुओं को दृष्टिगत रखा जाता है। जिसको हमने तीन स्पष्ट भागों में विभाजित किया है- औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान - जहाँ कुशल श्रमिकों के लिए विभिन्न ट्रेड चलाये जाते हैं। भारत में औपचारिक तकनीकी शिक्षा का प्रारम्भ 19वीं शताब्दी के मध्य में हुआ। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद का गठन नवम्बर 1945 में हुआ। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद को देश में तकनीकी शिक्षा के समन्वित विकास हेतु वैधानिक अधिकार 12 मई 1988 को सौंपा गया जो देश भर की तकनीकी शिक्षा के समन्वित विकास एवं उचित नियोजन, उत्थान एवं नियमन व मानकों का उचित पालन सुनिश्चित करवाने हेतु गठित की गई। देश की आबादी में प्रतिवर्ष 2.8 करोड़ युवा जुड़ जाते हैं तथा

1.28 करोड़ युवकों की लेबर फ़ेर्स में एंट्री होती है। लेकिन इनमें से सिर्फ 25 लाख प्रशिक्षित (ट्रेड) होते हैं जबकि मौजूदा अर्थव्यवस्था में जो रोजगार पैदा हो रहे हैं उनमें 90 फ़ीसदी ऐसे रोजगार हैं जिसमें तकनीकी शिक्षा की जरूरत होती है। अतः हमें परंपरागत रूप से दी जा रही तकनीकी शिक्षा का चेहरे को बदलने की आवश्यकता है जिसे हम आज के परिदृश्य में रोजगारपरक कह सकते हैं। आज की आवश्यकता है कि छात्रों को स्कूली शिक्षा से तकनीकी शिक्षा की तरफ शिफ्ट करने की कोशिश की जाय। अतः हुनर सम्बंधी तकनीकी शिक्षा जैसे कौशल विकास आईटीआई तथा ग्रामीण परिवेश में आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही तकनीकी शिक्षा में बदलाव की आवश्यकता है। दूसरा पहलू यह है कि हम भविष्य में आने वाली आवश्यकताओं को देखें और तकनीकी शिक्षा को अभी से उस दिशा में बढ़ावा देने का शुरु करें। हम विश्व स्तर पर आनेवाली तकनीकी आवश्यकता पर चिंतन करें और उसे लागू करने हेतु शिक्षा को सुदृढ़ करें। इस दिशा में आज अक्षय ऊर्जा रोबोटिक्स स्पेश इंजीनियरिंग बायोटेक्नालोजी इंटरनेट ओफ थिंग व चुंबुअल व न्यूअरल नेटवर्क आदि पर विशेष ध्यान देना होगा।